जादू की छड़ी

लक्ष्मीनारायण लाल

जादू की छड़ी

बच्चों के लिए संपूर्ण नाटक

जादू की छड़ी

बच्चों के लिए संपूर्ण नाटक

लक्ष्मीनारायण लाल

साधना

१६७५
©
लक्ष्मीनारायण लाल
नई दिल्ली

प्रथम संस्करण : १६७५
द्वितीय आवृत्ति : १६७७
नवीन आवृत्ति : १६८६

मूल्य
६ रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा० लि०
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
मित्र आफ़सेट प्रिंटर्स
नई दिल्ली-110002

जादू की छड़ी

बच्चों के लिए सपूर्ण नाटक

पात्र

निर्देशक	बहन
पुरुष	भाई
स्त्री	भुतनी—राजकुमारी
संजय	राक्षस—राजकुमार
टीचर	डॉक्टर
गीता	लेखक

कुछ लड़के-लड़कियाँ

पहला दृश्य

[खुले मंच पर दाहिनी ओर निर्देशक पर प्रकाश उभरता है।]

निर्देशक : दोस्तो, नमस्कार ! हाँ, नमस्कार ! शोर नहीं। अपनी-अपनी जगह पर बिलकुल शांत...खामोश। यह खुशी की बात है, आप सब हमारे नाटक का रिहर्सल देखने आये हैं ! क्यों नहीं ? आखिर कितने दिन हो गये हमें इस नाटक का रिहर्सल करते हुए! हमने आप सबसे वादा किया था, अपना यह नाटक आप सबको दशहरे की छुट्टियों से पहले ही दिखा देंगे। पर वादा नहीं पूरा कर सके। देखिये न, अब तक नहीं पूरा कर सके। आप कारण नहीं जानना चाहते कि आखिर यह नाटक अब तक तैयार क्यों नहीं हुआ। ठीक भी है, आपको तो नाटक देखने से मतलब है, न देख सकने के कारण से नहीं।...नहीं, नहीं, शोर-गुल नहीं। हाँ, आराम से बैठिये। आप रिहर्सल देखने आये हैं, तो इत्मीनान रखिये।

(मंच के बीचोबीच प्रकाश उभरता है। वहाँ स्थिर खड़े हैं—नाटक के पात्रों के अभिनेता।)

निर्देशक : देखिये—ये सब लोग कितने दिनों से आपके नाटक के रिहर्सल में जी-जान से लगे हैं। आइये, परिचय करा दूँ। यह है नाटक में भाई—अभिनय कर रहे हैं—आपके ही सहपाठी संजय। यह है बहन—जिसके अभिनय में लगी हैं कुमारी गीता। यह है नाटक की स्त्री—मतलब माँ, यह आपकी टीचर हैं। पहचान रहे हैं न? और यह है नाटक के पुरुष, पिता। उन्हें भी आप खूब पहचान रहे हैं न? और वह दूर खड़ी है—नाटक की भुतनी—अरे रे रे। हँसिये नहीं...यह जो अभिनय है—बहुत बड़ी कला...संयम, हाँ, धीरज की बात है यह, जी हाँ। ठीक। अभिनय कर रही हैं आपकी सबसे प्यारी टीचर, जो तुम्हें क्या पढ़ाती हैं—पहचान लो अब। हाँ, ठीक ..शाबाश!

(जैसे-जैसे परिचय दिया गया है, अभिनेताओं ने क्रमशः दर्शकों का अभिवादन किया है।)

निर्देशक : मेरा विश्वास है—कहानी आप सबको मालूम है। बहुत मशहूर परी कथा 'हंसल और गेथल' याद आ गया न? हाँ, शाबाश! उसी को हम नाटक के रूप में यहाँ कब से प्रस्तुत करना चाह रहे हैं।

पर गाड़ी आगे बढ़ती ही नहीं। हाँ, बिल्कुल यकीन कीजिये। सच कितने दिन हो गये! देखिये...अभी आप सबको खुद अन्दाज हो जायेगा।

(निर्देशक बीच में बढ़ता है।)

निर्देशक : तो लो...शुरू।

पुरुष : कहाँ से?

स्त्री : कौन-सा सीन?

संजय : सर, तीसरा सीन अच्छा रहेगा?

टीचर : नहीं, दूसरा सीन ठीक रहेगा।

गीता : हाँ, उसमें यह हमें खाना चाहती है।

(हँसी।)

निर्देशक : देखिये, हमें शुरू से ही करना पड़ेगा। दर्शकों की ओर देखिये, उन्हें अब तक हम नाटक नहीं दिखा पाये, तो शुरू से रिहर्सल ही सही। समझ गये न? ...शुरू...पहला सीन...स्टार्ट!

(केवल स्त्री-पुरुष मंच पर रह गये हैं। शेष सब चले जाते हैं।)

पुरुष : सुनो। बताओ—इस ग़रीबी में हमारा और बच्चों का क्या होगा?

स्त्री : (चुप है।)

पुरुष : जब हमारे पास कुछ भी खाने को नहीं है। बोलो। क्या सोचती हो?

स्त्री : सिर्फ एक ही तरीका है—कल सुबह इन्हें तुम कहीं दूर, घने जंगल में छोड़ आओ।

पुरुष : क्या कह रही हो ?

स्त्री : इस होशियारी से कि यह फिर कभी घर न लौट सकें।

पुरुष : नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। ऐसा कभी किसी बाप ने किया है ?

स्त्री : ठीक है। फिर भूख से हम सब मरें।

(विराम।)

पुरुष : और कोई उपाय नहीं ?

स्त्री : नहीं। यह उपाय मुझे एक चिड़िया ने बताया है—इत्ती सारी चिड़िया।

(लम्बा विराम।)

पुरुष : ठीक है...यही करना होगा।

(दोनों का प्रस्थान। दायीं ओर से पुरुष कंधे पर कुल्हाड़ा रखे और दोनों बच्चों को संग लिये हुए आता है।)

बहन : आप हमें कहाँ ले जा रहे हैं, पिता जी ?

भाई : चुपचाप चल न !

(माँ का प्रवेश, बायीं ओर से।)

बहन : माँ, मुझे बहुत भूख लगी है।

स्त्री : जा, पेट भर खाने को मिलेगा।

बहन : माँ, तू भी आ हमारे संग।

स्त्री : क्या बक-बक करती है ? जा अपने रास्ते।

(मंच पर तीनों चल रहे हैं। स्त्री

चली जाती है। भाई पिता की आँख बचा कर पाकेट से कुछ निकाल कर रास्ते में गिराता चलता है।)

बहन : आप हमें इस जंगल में कहाँ लिये जा रहे हैं, पिता जी ?

पुरुष : मैं जंगल में लकड़ियाँ काटूँगा। तुम लोग खूब मीठे-मीठे फल खाना और खेलना।

भाई : हाँ, पेट भर कर।...क्यों पिता जी, ठीक है न ?

पुरुष : (चुपचाप चल रहा है।)

बहन : पिता जी, आप चुप क्यों हैं,...कुछ बोलिये न।

भाई : हाँ, कोई गाना सुनाइये।

बहन : पिता जी, देखिये यह हँसता है। शरारती कहीं का !

भाई : तो क्या रोऊँ ?

(बहन उसका रास्ते पर कुछ गिराना देख लेती है।)

बहन : यह क्या है ?

भाई : (इशारे से उसे चुप रहने को कहता है।)

(तीनों चलते जा रहे हैं।)

पुरुष : चल न, तू पीछे मुड़-मुड़कर क्या देखता है ?

भाई : वह पेड़ पर चिड़िया देख रहा हूँ...कैसी चिड़िया है !

पुरुष : चुपचाप सीधे से अपने रास्ते चल।

(चलते हैं।)

बहन : कितना घना जंगल है, पिता जी !

भाई : चुपचाप रास्ते चल। हाँ...ऐसे। वह चिड़िया हमारे संग-संग चल रही है।

बहन : मुझसे अब नहीं चला जाता।

भाई : आ, मेरा हाथ पकड़।

(हाथ पकड़े चलते हैं। भाई रास्ते में कुछ गिराता चल रहा है।)

पुरुष : बस। अब हम पहुँच गये। तुम लोग ऐसा करो... जंगल से सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करो। यहाँ अलाव जलाकर बैठो। मैं तब तक तुम्हारे लिए मीठे-मीठे फल तोड़ कर लाता हूँ।

बहन : जल्दी आना, पिता जी !

पुरुष : हाँ, हाँ बहुत जल्दी आऊँगा। चलो, सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करो। देखते क्या हो ?

(पुरुष चला जाता है। दोनों सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करते हैं। अलाव जोड़ते हैं।)

बहन : पिता जी अब तक नहीं आये।

भाई : तो क्या हुआ ? अरे, वह चिड़िया कहाँ चली गयी ?

बहन : क्या हुआ...क्या हुआ ! (रोने लगती है।)

भाई : ओ हो ! इतनी भूख लगी है ! (जेब से रोटी निकाल कर) ले खा ले।...खा ना...ले...अच्छे बच्चे रोते नहीं। ले...।

(बहन रोटी खाती है भाई गाना गाता है। बहन धीरे-धीरे सो जाती है।)।

बहन : (उठती है।) अरे, सुबह हो गयी ! अब तक पिता जी नहीं आये ?

भाई : हाँ, बिलकुल नहीं आये। वह हमें जंगल में छोड़कर घर चले गये।

(बहन फूट-फूटकर रोने लगती है।)

भाई : अरे, रोने से कुछ होता है ?...सुन मैं बताता हूँ असली बात।

बहन : बता।

भाई : माँ ने पिता जी को सलाह दी कि 'इन बच्चों को जंगल में छोड़ आओ'। पिता जी ने वही किया।

बहन : क्यों ?

भाई : हमें खिलाने के लिए उनके पास कुछ नहीं था।

बहन : क्यों ?

भाई : क्योंकि वे बहुत ग़रीब हैं।

बहन : इसमें हमारा क्या दोष ?

भाई : पता नहीं।

बहन : तुम्हें कैसे पता कि पिता जी इस तरह हमें जंगल में छोड़ गये ?

भाई : जब वह लोग यह स्कीम बना रहे थे, मैं छिपकर सब कुछ सुन रहा था। (दिखाता है।) देखो न, तभी मैं रास्ते के निशान के लिए यह गिराता आ

रहा था।

(बहन देखती है।)

बहन : इसके सहारे क्या हम फिर घर वापस जा सकते हैं ?

भाई : हाँ, क्यों नहीं ?...बिलकुल।

बहन : तो चलो न।

भाई : आओ चलो।

(दोनों वापस जाने लगते हैं। चलते हैं।)

बहन : अरे, तुम रुक क्यों गये ?

भाई : ताज्जुब है, इधर मेरे गिराये हुए अनाज के दाने दिखायी नहीं दे रहे। (दोनों ढूंढ़ते हैं) कहीं भी नहीं।

बहन : लगता है, चिड़ियों ने खा लिये। (भयभीत) अब क्या होगा ? बताओ न, अब किधर से चलें ?

भाई : डरो नहीं। हमें हिम्मत से काम लेना चाहिए। आओ चलो। इधर...

(दोनों चलते हैं।)

भाई : वह देखो, कितनी खूबसूरत चिड़िया !

बहन : वह देखो मोर। कैसा नाच रहा है !

भाई : उधर देखो, मीठे-मीठे फल।

बहन : मुझे कितनी भूख लगी है !

भाई : लो, खाओ न !

(दोनों फल खाने का अभिनय करते

हैं।)

भाई : (सहसा) वह देखो...मिठाई का पहाड़ !

बहन : पहाड़ नहीं...मिठाई...केक, पेस्ट्री का बना हुआ घर।

दोनों : आय ! हाय !

(दोनों फल खा रहे हैं और दायीं ओर मिठाई के बने हुए घर को देख रहे हैं। बायीं ओर भुतनी प्रकट होती है।)

भुतनी : (हँसती है।)
आओ...आओ आओ
फल मिठाई खाओ।

दोनों : आते हैं आते हैं
फल मिठाई खाते हैं।

भुतनी : कौन
कौन
कौन ?

दोनों : हवा
हवा
हवा।

भुतनी : आओ
आओ
आओ !

दोनों : कहाँ

कहाँ

कहाँ ?

(भुतनी तेज़ हँसती है। जादू की छड़ी हिलाती हुई अजब तरह से आवाज़ करती है। भाई-बहन भुतनी को निहारते रह जाते हैं।)

भुतनी : (जादू की छड़ी हिलाती हुई) आओ, आओ !

(भाई भुतनी की ओर खिंचने लगता है। बहन चुप खड़ी है अपनी जगह। दायीं ओर से निर्देशक निकल कर हाथ से निर्देश देता है कि दोनों को खिंचते हुए भुतनी के पास जाना है। पर गीता सिर हिलाकर मना करती है।)

निर्देशक : गीता, यह क्या कर रही है ?

गीता : सर, यह जादू की छड़ी मेरे समझ में नहीं आती।

संजय : फिर वही रोज़-रोज़ का टंटा।

निर्देशक : गीता, आज तो मान जा। लोग क्या कहेंगे ?

संजय : अच्छा-खासा चल रहा था।

गीता : (चिढ़ाती है।) ओऊ, ओऊ, ओऊ !

संजय : सर, देखिये, मुझे मुंह बना रही है।

निर्देशक : आर्डर !

(सन्नाटा।)

निर्देशक . मैंने तुम्हें कितना समझाया—यह नाटक है। उसमें यह जादू की छड़ी है, बस।

गीता : पर जादू कहाँ है इसमें ? लाइये, इसे मैं घुमाती हूँ। (घुमाती है) चले आओ...चले आओ।

(निर्देशक खिंचा हुआ गीता के पास आने लगता है।)

गीता : नहीं, नहीं, यह झूठ है। आप अपने-आप चल के आ रहे हैं।

निर्देशक : वाह !

गीता : चूंकि यह लिखा हुआ है कि जादू की छड़ी घुमाने से यह हो जाता है। इसलिए आप...

संजय : तो वही मान लो।

टीचर : प्लीज़ गीता, मान जा, मेरी प्यारी गीता !

गीता : मैडम !...ममी और पापा ने मुझे बचपन से बताया है, जब से मुझे होश है—जादू वगैरह सब झूठ है—ग़लत—बच्चों को किस्से-कहानियाँ सुनने के लिए यह झूठ-मूठ में गढ़ लिया गया है।

संजय : (गुस्से में) तो तुमने इस नाटक में भाग क्यों लिया ?

गीता : लिया...अच्छा लगा इसीलिए।

संजय : उल्टे आँख दिखाती है।

गीता : दिखाऊँगी।

टीचर : गीता !...संजय !

निर्देशक : भाई, क्या करते हो ?

संजय : सर, यह खामखा तड़ी मारती है।

गीता : शट अप !

संजय : यू शट अप !

(प्रकाश बुझकर केवल निर्देशक पर थोड़ा-सा शेष रह जाता है।)

निर्देशक : देख लिया।...यह है मेरी दिक्कत। गीता जादू की छड़ी पर विश्वास नहीं करती। वह तर्क करती है। बताइये, कौन दे उसे जवाब? आप कहते हैं—गीता को निकाल कर किसी और को वह पार्ट क्यों नहीं दे दिया गया?...या अब भी किसी और लड़की को उसकी जगह क्यों नहीं रख लिया जाता? यह सवाल नहीं है—सवाल यह है कि गीता सोचती है—सवाल और तर्क करती है। वह जानना चाहती है—सच्चाई है क्या आखिर? (सहसा) नहीं-नहीं, आप जाइये नहीं। बैठिये। यह तो रिहर्सल है। रिहर्सल में यही तो होता है—अभिनेता सच्चाई जानना चाहता है। वह नहीं जानेगा, तो आपको दिखायेगा क्या? जी हाँ, यही तो बात है। अब आपको एक रहस्य की बात बताऊँ। गीता ने अपने हाथ में जादू की छड़ी ले ली है। वह कल्पना करने लगी है उसके बारे में... हाँ, बिलकुल...सारी बात कल्पना और विश्वास की ही तो है।...खुद की कल्पना...और खुद का विश्वास। हाँ, देखिये, फिर क्या होता है। गीता बेहद कल्पनाशील है। लोग खामखा उसे डाँटते

हैं। वह सबसे छिपकर जादू की छड़ी का रहस्य जानना चाहती है—कल्पना से रहस्य ज्ञान।...तो मैं भी उससे दूर हट जाता हूँ। हम सब भी उससे छिपकर जरा देखें...हाँ, छिपकर...उससे दूर रह-कर...ताकि वह अपनी कल्पना में स्वतंत्र हो जाय।...स्वतंत्र और मुक्त...।

(प्रकाश बुझ जाता है।)

दूसरा दृश्य

[मंच पर अकेली गीता जादू की छड़ी लिये हुए आती है, वह इधर-उधर देखती है। ढूंढती है—कहीं कोई नहीं दिखायी दे रहा है। वह पुकारती है।]

गीता . मास्टर साहब...संजू...संजू ! कोई नहीं। मुझसे नाराज़ होकर चले गये। इसमें मेरी क्या ग़लती ? (वह जादू की छड़ी हिलाती है—उसे रगड़ती है।) देखो न, इसमें कोई जादू नहीं। कहीं कोई जादू नहीं। मैं इसे तोड़ डालूंगी। न रहेगी यह जादू की छड़ी, न कोई बवाल होगा। (वह तोड़ना चाहती है।) अरे, यह नहीं टूटती ? ...इतनी ताक़त इसमें? मैं इसे फर्श पर पटक-पटक कर तोड़ूंगी।

(वह जादू की छड़ी फर्श पर पटकती है—एक अजब आवाज़ सुनायी देती है। फिर उठाती है।)

गीता : अरे...कैसी आवाज़ सुनायी दी ?

(वह फिर पटकती है। चारों ओर से अजब संगीत और आवाजें सुनायी देती और फैलती हैं। मंच का प्रकाश बदल जाता है—अजब रहस्यमय।)

गीता : (आश्चर्य से जादू की छड़ी लिये हुए) यह क्या है? इसमें सचमुच कोई जादू है? (हँसती है।) अगर इसमें कोई ताक़त है...तो वह बाहर आ!

(फ़र्श पर छड़ी जोर से पटकती है। तेज आवाज और संगीत। सहसा सामने राक्षस प्रकट होता है। गीता उसे देखकर डर जाती है। पूरा मंच आवाजों, और रहस्यमय संगीत से भर गया है।)

गीता : कौन है?

राक्षस : खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ!

गीता : कहानियों का राक्षस तो बड़े-बड़े काम करता है।

राक्षस : (हँसता है।)

गीता : मैंने पढ़ा है—राजकुमारी उसे जो आज्ञा देती थी, राक्षस वही काम करता था।

राक्षस : खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ!

गीता : कहते ही, वह एक से एक मुश्किल...असम्भव काम पूरा कर दिखाता था।

राक्षस : खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ!

गीता : तुम कैसे राक्षस हो?

राक्षस : खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ!

गीता : पहले तू काम करता था...क्यों?

राक्षस : हाँ, पहले एक से एक असम्भव काम भी सम्भव था।

गीता : अब क्यों नहीं करता?

राक्षस : अब आलसी हो गया। खाऊँ, खाऊँ, खाऊँ!

गीता : आलसी क्यों हो गया?

राक्षस : बहुत दिनों तक बेकार...निकम्मा रहने के कारण।

गीता : तो अब काम कर।

राक्षस : काम तो करता हूँ...खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ। घूमूं ...घूमूं...घूमूं...घूमूं।

गीता : यह भी कोई काम है?

राक्षस : कौन-सा काम?

गीता : जा, मेरे लिए इंगलैंड से इतना सारा चाकलेट ला।

राक्षस : मैं अब इंगलैंड नहीं जाता।

गीता : अच्छा, कलकत्ते से रसोगुल्ला ला।

राक्षस : मैं अब इतनी दूर नहीं जाता।

गीता : अच्छा, चांदनीचौक से ही मिठाई ला।

राक्षस : मैंने कह दिया...अब मैं आलसी हूँ...मुझमें अब न उड़ने की ताकत है...न कोई मुश्किल काम करने की इच्छा है।...मुझे कोई ऐसा काम दे...जो इसी कमरे के भीतर कर सकूँ, वरना तुझे खाऊँगा,

खाऊँगा।

(राक्षस गीता को खाने को दौड़ता है। वह भागती है।)

गीता : रुक जा...रुक जा...तुझे भूख लगी है न?...यह ले मेरी टिफिन। इसे खा जा।

राक्षस : नहीं...नहीं...मैं तो तुझे ही खाऊँगा...खाऊँ... खाऊँ...खाऊँ! (गीता को दौड़ाता है। गीता चिल्लाती है।)

गीता : संजू...संजू...बचाओ...बचाओ!

(दौड़ता हुआ संजय आता है। गीता उससे चिपक जाती है।)

गीता : यह राक्षस मुझे खाना चाहता है।

संजय : क्यों भाई राक्षस...ऐसा क्यों करते हो?

राक्षस : करता हूँ।

संजय : खाने को तुम्हारे लिए कोई कमी है...जानवर... ...पेड़-पौधे।

राक्षस : मैं तो इसे ही खाऊँगा।

संजय : क्यों?

राक्षस : क्योंकि यही तुम्हारी कहानियों में लिखा हुआ है।

गीता : कहाँ लिखा है?

राक्षस : यह देखो।

(वह कई किताबें निकाल कर देता है—दोनों पढ़ने लगते हैं।)

राक्षस : देखो...उस पीली किताब में तीस पेज पर...और

उस लाल किताब में सोलह पेज पर।

(राक्षस 'खाऊँ...खाऊँ' करता हुआ देख रहा है। दोनों की आँखें किताबों में गड़ी हैं।)

संजय : इसमें यह भी तो लिखा है कि तुम्हें कोई काम दे ...वरना तुम खा जाओगे।

गीता : इसे काम इसी कमरे के भीतर ही चाहिए।

राक्षस : हाँ, मैं कब से बेकार होने के कारण आलसी हो गया हूँ।

संजय : क्यों थे बेकार?

राक्षस : अपने आप से पूछो दाम, क्यों नहीं लिया मुझसे काम?

गीता : झटपट इसको दो कोई काम, वरन करे यह काम तमाम।

संजय : सुन रे, राक्षस! सफाई कर कमरे की।

(राक्षस कमरे की सफाई करने लगता है। गीता और संजय डरे हुए आपस में बात करते हैं।)

राक्षस : सफाई खतम। और दो काम। वरना काम तमाम।

(राक्षस फिर गीता को पकड़ने दौड़ता है।)

संजय : अच्छा चल, नाच दिखा।

राक्षस : कौन नाच?

(संजय सोचने लगता है।)

गीता : (सहसा) भरत नाट्यम।

राक्षस : (नृत्य करता है।)

संजय : कोई ऐसा डांस बताओ, जिसके करने में इसकी नानी मर जाये।

राक्षस : और बताओ काम...वरना काम तमाम।

संजय : अमरीकन डांस।

(वह करता है।)

गीता : यह सब डांस जानता है। इसे कोई मुश्किल काम दो।

संजय : (खुश) 'आइडिया'!

(पाकेट से अनाज के दाने निकाल कर फर्श पर बिखेरता है।)

संजय : लो मुर्गा बनकर एक-एक दाना इकट्ठा करो।

(वह मुर्गे की तरह बैठ कर दाने चुगता है।)

गीता : कोई और मुश्किल काम सोचो। देखो, दाने इकट्ठे कर चुका।

राक्षस : (उठता है।) ये लो अपने दाने।

गीता : खा डालो।

राक्षस : खाऊँगा तो केवल तुझे...तुझे।

(गीता को दौड़ाता है।)

गीता : बचाओ...बचाओ!

संजय : यह ले...इस किताब को पढ़कर बता—इसमें क्या

कहा गया है?

(राक्षस किताब लेकर पढ़ने लगता है।)

संजय : इतनी मोटी किताब है। पढ़ते-पढ़ते मर जायगा।

गीता : बड़ी मुश्किल है...मतलब नहीं बता पायेगा।

संजय : मरने दो।

गीता : हाय! कितनी तेज़ी से पढ़ रहा है।

संजय . मतलब न बता पाया तो मज़ा चखाऊँगा।

राक्षस : (सहसा) किस्सा खतम...काम हज़म। इसमें बताया गया है कि मनुष्य का अब तक का इतिहास क्या है...प्राचीन युग...मध्य युग...और आधुनिक युग...।

गीता : महात्मा बुद्ध कौन थे।

राक्षस : कपिलवस्तु के राजकुमार, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक।

संजय : वैदिक काल किसे कहते हैं?

राक्षस : जिस काल में वेद लिखे गये। खासकर ऋग्वेद-काल को वैदिक काल कहते हैं।

गीता : अकबर के दरबार में कौन-कौन थे?

राक्षस : नवरत्न...बीरबल, टोडरमल...।

संजय : ईस्ट इंडिया कम्पनी के बारे में बताओ।

राक्षस : यह अंग्रेज व्यापारियों की कम्पनी थी, १८५७ में इसका खात्मा हुआ।

संजय : आर्य लोगों का भोजन क्या था?

राक्षस : मांस, दूध, फल और अन्न।

गीता : कोई मुश्किल सवाल करो।

संजय : उस आदमी का नाम बताओ जिनके नाम में कुल तेरह अक्षर हैं।

राक्षस : मोहनदास करमचन्द गांधी।

गीता : औरंगजेब कितने बजे सोकर उठता था ?

राक्षस : चार बजकर तेंतीस मिनट पर।

गीता : वाह, तब घड़ी कहाँ थी ?

राक्षस : पहली नमाज़ इसी वक्त पढ़ी जाती है...आज भी।

गीता : यह तो कमाल है !

(संजय, गीता परस्पर बातें करते हैं।)

गीता : अच्छा बताओ, हमने क्या बातें कीं ?

राक्षस : तुमने कहा—इस राक्षस से कैसे छुटकारा होगा ? इसने कहा—इसे काम में फँसा दो। तुमने कहा, ऐसा कौन-सा काम है जिसमें यह हमेशा के लिए फँस जाय। इसने कहा, 'सोचना पड़ेगा।'

गीता : वाह !

राक्षस : खाऊँ, खाऊँ, खाऊँ !

संजय : लो यह किताब पढ़कर सुनाओ।

(राक्षस तेज़ी से पढ़ने लगता है। दोनों कान बन्द कर लेते हैं।)

गीता : बस, बाबा बस।

संजय : यह लो, सवाल हल करो।

(एक कागज़ पर लिख देता है। वह तत्काल हल कर देता है !)

संजय : अच्छा, बताओ क्लोरोफार्म का फार्मूला क्या है ?

राक्षस : क्लोरोफार्म का फार्मूला सी एच० सी एल० ३।

गीता : लो, फन्दा खोलो।

(राक्षस फन्दा खोल देता है।)

संजय : चलो, गाना गाओ।

(यह गाता है।)

संजय : बस, गाते रहो...बन्द मत करो।

(राक्षस चिल्लाकर गा रहा है।)

गीता : बस, बस,...मेरा कान फट जायेगा।

संजय : अच्छा, मुँह खोलो, दोनों हाथ उठाये खड़े रहो।

(वह वैसे ही करता है।)

गीता : (डरना) नहीं, नहीं। मुँह बन्द करो।

राक्षस : खाऊँ, खाऊँ, खाऊँ !

गीता : (भागती है) अब क्या होगा ?

संजय : चलो, छींकते रहो।

(छींकना शुरू करता है।)

गीता : बस...बस...मेरा सर घूमने लगा।

संजय : चलो, मक्खियाँ मारो।

(दौड़-दौड़कर मक्खियाँ मारता है। गीता संजय तब तक सलाह करते हैं। राक्षस संजय की ओर झपटता है।)

राक्षस : मक्खी...मक्खी !

(संजय अपने ऊपर की मक्खी उड़ा देता है। मक्खी गीता के ऊपर आ बैठती है। राक्षस मारने दौड़ता है। गीता मक्खी उड़ाकर अपने को बचाती है।)

राक्षस : खाऊँ, खाऊँ, खाऊँ !

गीता : अच्छा चलो, एक ऐसी कहानी सुनाओ जो कभी खत्म न हो।

राक्षस : तुम्हें सुनना पड़ेगा।

गीता : जब तक मन होगा, सुनेंगे।

राक्षस : बीच में कोई टोकेगा नहीं।

दोनों : चलो, मंजूर।

राक्षस : एक बहुत बड़ा जंगल था। जंगल में पीपल के असंख्य पेड़ थे। उस जंगल में एक चिड़िया पीपल के एक पत्ते पर बैठती फिर उड़ जाती, फुर्र...! दूसरे पर बैठती, फिर उड़ जाती फुर्र···! तीसरे पर बैठती फिर उड़ जाती, फुर्र···। चौथे पर बैठती, फिर उड़कर पाँचवे पर बैठती, फिर उड़ जाती फुर्र...।

गीता : फिर आगे क्या हुआ ?

राक्षस : टोक दिया न बीच में...शर्त क्या थी ?

संजय : तुम कब तक यही फुर्र-फुर्र करते जाओगे ?

राक्षस : जब तक जंगल के सारे पीपल के पत्ते खतम नहीं हो जाते—फिर आगे मैं कहाँ बढ़ता ?

गीता : यह भी कोई कहानी है ?

संजय : इसके मानी, तू हमें खाने पर तुला है।

गीता : जल्दी, इसे कोई काम बताओ ? यह कैसे घूर रहा है ?

संजय : चलो, यहाँ एक गोला खींचो। यह लो चाक।

(राक्षस सरकिल खींचता है।)

संजय : जब तक हम लोग दूसरा काम तुझे न बतायें, तुम इस पर चक्कर काटो।

(राक्षस गोलाई में दौड़ना शुरू करता है।)

संजय : बस चक्कर काटो। मरो !

(गीता और संजय प्रसन्नता से उसे चक्कर काटते हुए देखते हैं। दोनों जाते हैं। वह अकेला चक्कर काट रहा है। थोड़ी देर बाद दोनों आते हैं।)

राक्षस : पानी...पानी...पानी...!

संजय : नहीं...नहीं...नहीं...।

राक्षस : बहुत प्यास।

संजय : अच्छा है, प्यास से मर, मर, मर।

गीता : हाय, बेचारे को पानी पिला।

संजय : बड़ी आई दया दिखाने। तुझे खाने आया था।

गीता : अब कैसे खायेगा ? काम में तो फँस गया है।

संजय : यह काम खतम भी तो हो सकता है।

गीता : हाय, बेचारा !

(राक्षस दौड़ता-दौड़ता, चीखकर गिर पड़ता है और बेहोश हो जाता है। संजय खुश है। गीता दुखी है।)

प्रकाश बुझता है।

तीसरा दृश्य

[प्रकाश उभरता है। राक्षस गोलाई में बीमार पड़ा है। गीता जाती है।]

गीता : कैसी तबियत है ?

राक्षस : (कराहता है)

गीता : उठो...उठने की कोशिश करो।

राक्षस : (प्रयत्न करता है...कराह कर गिर पड़ता है।)

गीता : क्या हो गया है तुम्हें ? राक्षस होकर इतने असहाय !

राक्षस : मुझे उठाओ।

गीता : तुम्हारे पास आने में मुझे डर लगता है।

राक्षस : (हाथ उठाता है।)

गीता : नहीं, नहीं, मैं तुझे नही छू सकती।

राक्षस : इतनी डरती हो ?

गीता : एक लकड़हारा जंगल में जा रहा था। उसे एक बीमार राक्षस मिला। उसे दया आई। सहारा देने लगा, राक्षस ने उसे दबोच लिया।

राक्षस : यह कहानी झूठी है।

गीता : किताब में पढ़ी है।

राक्षस : वह किताब झूठी है।

गीता : राक्षस की चाल थी वह। बीमारी के बहाने से लकड़हारे को खा लिया।

(राक्षस कराहने लगता है। संजय आता है।)

गीता : देखो, यह कितना बीमार है!

संजय : अभी तक मरा नहीं? क्यों रे? बड़ा आया था...

गीता : कितने दिन हो गये, कुछ भी खाया-पिया नहीं।

राक्षस : (कराहता है।)

संजय : तूने इसे खाना-पानी दिया न, बड़ा अच्छा किया।

गीता : दूर रख दिया, पर यह खा-पी न सका।

संजय : हाँ हाँ, यह तुझे खाने आया है...और चीजें क्यों खायेगा?

गीता : हाय बेचारा! दिन-रात यहीं पड़ा कराहता है।

संजय : मरने दो ससुरे को!

गीता : डॉक्टर बुलाया है।

संजय : यह क्या किया? अच्छा होते ही तुझे खा लेगा, खबरदार...यह बीमार नहीं, यह इसकी चाल है।

गीता : नहीं, यह मजबूर है।

संजय : यह आलसी है...बीमारी का बहाना इसीलिए किया है कि कोई काम न करना पड़े, और मौका पाते ही

तुझे हड़प जाये।

(राक्षस चीखता है, चिल्लाता है। संजय दौड़कर एक लाठी ले आता है और उसे मारने चलता है।)

गीता : नहीं, नहीं। मत मारो बेचारे को। यह तो खुद मर रहा है।

संजय : यह ससुरा कभी नहीं मरेगा—यह काला चोर, बदमाश, नमकहराम! इसे मारने में कोई पाप नहीं।

गीता : नहीं...नहीं। दया करो।

(डॉक्टर आता है।)

गीता : हैलो डॉक्टर साहब, नमस्ते!

डॉक्टर : नमस्ते। कहाँ है मरीज़!

गीता : यही है।

संजय : खबरदार। वह असली राक्षस है, डॉक्टर साहब!

(डॉक्टर उसे देखते ही डर के मारे चिल्लाकर भागता है। गीता पीछा करती है। उसे पकड़े हुए ले आती है।)

डॉक्टर : तूने पहले क्यों नहीं बताया, यह राक्षस है।

संजय : खबरदार, डॉक्टर साहब!

(डॉक्टर डर से काँप रहा है।)

गीता : देखिये, यह कितना बीमार है।

संजय : बीमार नहीं, यह इसकी चाल है।

गीता : चुप रहो।

डॉक्टर : हुँ...हुँ...हुँ...हुँ...।

गीता : इसे देखिये।

डॉक्टर : नहीं नहीं, यह मेरे बस का नहीं।

(भागता है। गीता पकड़े हुए है।)

डॉक्टर : अरे बाप रे बाप!

गीता : आप इतने बड़े डॉक्टर होकर इस तरह डर रहे हैं?

डॉक्टर : बाबा रे, मुझे माफ़ करो।

गीता : बीमार की दवा आपका फर्ज़ है।

संजय : भला कभी राक्षस भी बीमार होता है? (हँसता है।)

गीता : चुप रहो तुम।

संजय : अच्छा होते ही तुम्हें खा लेगा, तब पता चलेगा, हाँ।

गीता : डॉक्टर साहब, देखिये बेचारे को।

(गीता पकड़े हुए राक्षस के पास ले आती है। राक्षस सिर उठाता है। डॉक्टर चिल्लाकर भागता है।)

गीता : डरिये नहीं...डरिये नहीं।

संजय : अच्छा डॉक्टर साहब, मैं लाठी ताने खड़ा हूँ... आप बेफिकर होकर देखिये।

डॉक्टर : अच्छी बात है...लाठी ताने रहना...जैसे ही कोई खतरा लगे, लाठी चला देना।

(डॉक्टर धीरे-धीरे डरा हुआ बढ़ता है।)

डॉक्टर : (दूर से ही देखता है।) सिर ऊपर उठाओ...देखो ...बस, बस, बस, ज़बान बाहर निकालो...बस... बस...बस...।

(दूर भागता है।)

डॉक्टर : इसे पहले पानी पिलाओ, बेहद प्यासा है।

गीता : बिलकुल ठीक डॉक्टर साहब...पर पानी कौन पिलाये ?

डॉक्टर : कोई पिलाये...मैं नहीं पिला सकता।

संजय : मैं भी नहीं।

गीता : अच्छा, एक तरकीब।...बाँस की एक नलकी से इसके मुँह में पानी पहुँचाया जाये। (दौड़कर लम्बी नलकी और पानी ले आती है।) मुँह ऊपर उठाओ ...और ऊपर...यह मुँह में लगाओ...लगाओ। संजय, ले पानी डाल इसमें।

(राक्षस के मुँह में लगे बाँस के सिरे में संजय पानी डालता है। राक्षस पानी का तेज़ कुल्ला करता है। सब भागते हैं।)

संजय : डॉक्टर साहब, यह बड़ा बदमाश है। इसे प्यास-वास कुछ नहीं लगी है। इसे मरने दो।

(राक्षस इशारे से निःशब्द गीता से कुछ कहता है।)

गीता : यह कह रहा है...यह पानी नहीं पी सकता।

संजय : हाँ, हाँ, राक्षस तो सिर्फ खून पीता है। वह भी मनुष्य का...वह भी गीता का।

(गीता संजय को मारने दौड़ती है। राक्षस कराहता है।)

गीता : डॉक्टर साहब, इसकी नाड़ी देखिये। कुछ दवा दीजिये।

डॉक्टर : क्या ?...नाड़ी देखूँ ? मतलब राम-नाम सत्य हो जाऊँ ? ना बाबा, ना।

(गीता भागते हुए डॉक्टर को रोकती है।)

गीता : यह आपका फ़र्ज़ है।

डॉक्टर : मेरी जान लेना चाहती हो ?

गीता : यह कुछ नहीं कर सकता। इसकी हालत खुद इतनी बुरी है।

संजय : अच्छा डॉक्टर साहब, हिम्मत कीजिये। मैं ताने हूँ लाठी।

डॉक्टर : पर दूर से ही नाड़ी देखूँगा।

(बढ़ते हैं।)

गीता : अपना हाथ इधर बढ़ाओ।

(राक्षस हाथ बढ़ाता है।)

डॉक्टर : (बिना छुए, दूर से ही) हाय...नाड़ी तो बहुत तेज़ चल रही है।

गीता : नाड़ी पर उँगली तो रखिये।

डॉक्टर : इतनी दूर से ही जब नाड़ी की चाल गिन सकता हूँ—धक...धक-धक-धक-धक-धक-धक-धक।

संजय : अरे, तूफान-मेल हो रही है ?

डॉक्टर : उससे भी तेज़।

गीता : क्या तलकीफ है इसे ?

डॉक्टर : टेम्परेचर लेना होगा।

गीता : लीजिये।

(डॉक्टर थर्मामीटर पास ल जाकर दूर ही रोक लेता है।)

डॉक्टर : देखता है। इतनी दूर से ही टैम्परेचर है ? ब्वाइलिंग प्वाइंट...!

संजय : अरे...रे...रे...तभी तो इतनी लपट आ रही है।

गीता : इसकी बीमारी क्या है ?

डॉक्टर : जैम्बो फीवर विद डबल निमोनिया एंड हिस्टीरिया।

गीता : वजह ? मतलब रीज़न क्या है ?

डॉक्टर : आलस्य...लेज़ीनेस एंड ओवर ईटिंग।

गीता : मगर जब से यहाँ आया है...इसने आज तक कुछ भी नहीं खाया-पीया।

डॉक्टर : यह रोग पुराना है।

संजय : पहले से जो कितने आदमियों को खा रखा है ?

डॉक्टर : सही बात।

संजय : इसे जुलाब की टिकिया देनी चाहिए।

गीता : क्या बकते हो ?

(डॉक्टर हँसता है।)

संजय : पर नहीं...अगर यहाँ इसका पेट चलने लगा तो सारा शहर...।

(राक्षस हँस पड़ता है।)

गीता : यह हँस क्यों रहा है ?

संजय : बदमाश है।

डॉक्टर : हिस्टीरिया का दौरा है।

संजय : हिस्टीरिया ना फ़िस्टीरिया। (लाठी तानता है।) चुप होता है कि नहीं, मारूँ ? अभी तेरी खोपड़ी के चार कर दूंगा।

गीता : (लाठी छीनती है।) बड़े आये बहादुर, बीमार के साथ ऐसा सलूक करते हुए शर्म नहीं आती ?

(लाठी बाहर फेंक आती है।)

गीता : तो डॉक्टर साहब, यह कैसे अच्छा होगा ?

डॉक्टर : इसकी दवा सिर्फ भगवान के पास है।

गीता : कहाँ जाते हैं ?

डॉक्टर : अब मुझे जाना है, वरना मैं यहीं बीमार पड़ जाऊँगा। (छींकते हैं।) प्लीज़ अब मैं (छींक) यहाँ एक मिनट भी और (छींक) नहीं (छींक) रुक (छींक) सकता। धन्य (छींक) वाद।

(डॉक्टर का तेज़ी से प्रस्थान।)

संजय : अब मैं भी यहाँ नहीं रुक सकता (हिचकी) इसकी साँसों में ज़हरीली गैस निकल (हिचकी) रही है। भागो (हिचकी) भागो (हिचकी) !

गीता : मुझे तो कुछ नहीं हो रहा है।

संजय : (हिचकी) अभी होगा...(हिचकी) तुम अभी बेहोश होकर गिरोगी...(हिचकी) फिर यह तुम्हें (हिचकी) खायेगा (हिचकी) सावधान (हिचकी) सावधान !

(संजय भागता है। गीता उसे पकड़ने दौड़ती है। थोड़ी देर बाद अकेली गीता आती है। राक्षस बेहोश हो गया है।)

गीता : हाय ! यह तो बेहोश हो गया। हे ईश्वर...अब क्या होगा ? हाय बेचारा...कितना गरीब...असहाय लग रहा है !

(धीरे-धीरे पास बैठकर उसे छू देती है। उसे सहलाती है। उसके माथे पर जैसे ही हाथ रखती है...बहुत तेज़ संगीत बजने लगता है। प्रकाश नाचने लगता है। राक्षस राजकुमार बन जाता है। गीता राजकुमार को अपने सामने देखकर आश्चर्यचकित होती है।)

गीता : यह मैं क्या देख रही हूँ !

राजकुमार : नमस्ते...मैं राजकुमार हूँ।

गीता : तुम तो राक्षस थे।

राजकुमार : धन्यवाद है तुम्हें।

गीता : पर वह राक्षस कहाँ गया ?

राजकुमार : मैं वह राक्षस था।

गीता : पर कौन हो तुम ? वह राक्षस कौन था ?

राजकुमार : मैं ही वह राक्षस था। बहुत दिनों की बात है...मैं जंगल में शिकार खेलने गया था। वहाँ एक काली परी ने मुझे श्राप देकर राक्षस बना दिया। मैं राक्षस बना जंगल में घूम रहा था। फिर मुझे एक सफेद परी मिली। उसने मुझे वरदान दिया—'जब तुम्हें कोई एक पवित्र लड़की स्नेह से छुएगी, तुम फिर राजकुमार बन जाओगे'। और आज वही हुआ, मैं कृतज्ञ हूँ तुम्हारा।

गीता : मुझे विश्वास नहीं हो रहा है...यह सब क्या हुआ ?

राजकुमार : तुम्हारी सुन्दरता से मैं सुन्दर हो गया। तुम्हारी इन्सानियत से मैं इन्सान हो गया। तुम्हारी खुशी से मैं खुश हो गया। तुमने मुझे फिर राजकुमार बना दिया।

गीता : (खुशी से पुकारती है) संजू...संजू...संजू...!

(संजय दौड़ा हुआ आता है। राजकुमार को देखकर आश्चर्यचकित होता है।)

संजय : यह कौन है ?

गीता : मेरे छूते ही वह राक्षस, यह राजकुमार बन गया।

राजकुमार : नमस्ते !

संजय : यह कैसे हुआ ?

गीता : बताती हूँ...चलो मास्टर साहब के पास...आओ ...चलो !

(तीनों जाते हैं। मंच का प्रकाश बदल जाता है—सारा वातावरण संगीत से भर जाता है।)

(प्रकाश बुझता है।)

चौथा दृश्य

(वे तीनों निर्देशक के सामने आते हैं।)

गीता : सर, चलिये ! रिहर्सल आगे शुरू कीजिये।

संजय : अब रिहर्सल मज़ेदार होगा।

निर्देशक : यह कौन है ?

गीता : राजकुमार।

निर्देशक : कैसा राजकुमार ?

गीता : वह जो राक्षस था न, वही मेरे छूते ही राजकुमार हो गया।

निर्देशक : यह तूने क्या किया ? हमें नाटक में तो उसी राक्षस की ही ज़रूरत है।

संजय : राक्षस क्यों ?

निर्देशक : बिना राक्षस के नाटक की कहानी आगे कैसे बढ़ेगी ?

गीता : कहानी बढ़ाने के लिए राक्षस—यह सरासर ज्यादती है।

निर्देशक : किसकी ?

गीता : लेखक की—ड्रामा करने वालों की।

संजय : राजकुमारी से कहानी और अच्छी बनेगी...चलिये, रिहर्सल कीजिये, सर !

निर्देशक : पर कैसे ?

राजकुमार : मैं बताता हूँ।

(बायीं ओर से दौड़ी हुई गुस्से से भुतनी आती है। डरावना संगीत फैलता है। वह गुस्से से काँप रही है।)

भुतनी : कहाँ है मेरा राक्षस ? जवाब दो ?

राजकुमार : क्षमा हो...मैं अब राक्षस से राजकुमार हो गया।

भुतनी : किसने किया ?

गीता : मैंने।

भुतनी : तुझे इसकी सजा मिलेगी।

निर्देशक : शांत...शांत हो। इसमें गीता का कोई दोष नहीं।

राजकुमार : यह निर्दोष है।

संजय : इसमें तेरा क्या नुकसान हुआ ?

भुतनी : चुप रहो। राक्षस मेरा नौकर था। मैंने ही उसे भेजा था, तुम दोनों को ले आने के लिए।

गीता : झूठ है। मैंने तेरी जादू की छड़ी पटकी, वह राक्षस प्रकट हो गया।

भुतनी : वह मेरी चाल थी। मैं ही शंका बनकर तेरे दिल में बैठी थी। मैंने ही तुझसे जादू की छड़ी पटकवाई... तू बड़ी तर्कवाली बनी घूम रही थी न !

संजय : चालबाज !

गीता : चुप रह...भाग जा यहाँ से !

भुतनी : ख़बरदार...ख़बरदार...ज़बान चलायी, ख़बरदार !

(झगड़ा हो जाता है।)

निर्देशक : शान्त...शान्त...शान्त। सुनो, अब तो जो होना था, वह हो गया। चलो, ड्रामे का रिहर्सल तो पूरा करो।

भुतनी : बिना राक्षस के ड्रामा कैसे होगा ?

निर्देशक : होगा...चलो...।

भुतनी : पहले इससे पूछो—अब यह मेरी जादू की छड़ी घुमाते ही मेरी ओर चली आएगी ?

गीता : हाँ, अब मुझे विश्वास है।

भुतनी : अच्छा, तो चलो...चलो ..।

निर्देशक : सुनो...राजकुमार, तुम बाहर चले जाओ। जाओ बाहर।(जाता है।)अब तुम दोनों जंगल में घूमना शुरू करो...। चलो, शुरू...।

(दोनों चलने लगते हैं। भुतनी जादू की छड़ी घुमाती है। संजय और गीता भुतनी की ओर खिंचने लगते हैं। जैसे ही भुतनी गीता को दबोचने चलती है, राजकुमार दौड़ा हुआ आता है और बचा लेता है।)

भुतनी : (क्रोध से) यह क्या हो रहा है ? मैं इसे माफ़ नहीं

कर सकती।

संजय : (चिढ़ाता है) कों...कों...कों...कों...!

गीता : (चिढ़ती है) पें...पें...पें...पें...!

(भुतनी गुस्से से पागल होती है।)

निर्देशक : आर्डर...आर्डर ! अब इस सीन को छोड़ दो... अगला सीन लो।

भुतनी : जब मेरा राक्षस ही नहीं, तो अब ड्रामा हो ही नहीं सकता...कोई सीन नहीं।

गीता : क्या राजकुमार के साथ ड्रामा नहीं हो सकता ?

भुतनी : नहीं...नहीं...नहीं...।

(राजकुमार भुतनी के पास जाकर हाथ जोड़ता है।)

राजकुमार : इतना गुस्सा मत करो, देवी !

भुतनी : (आवेश में) भाग जाओ...ख़बरदार, तूने मुझे फिर देवी कहा।

राजकुमार : देवी !

संजय : देवी !

गीता : देवी !

(भुतनी एक-एक के ऊपर झपटती है। सब भागते हैं। निर्देशक स्थिति को सम्भालता है।)

निर्देशक : पर बिना राक्षस के नाटक क्यों नहीं हो सकता ?

भुतनी : यह उस लेखक से पूछो, जिसने इस तरह हमारी

कहानी लिखी है।

निर्देशक : कहाँ है वह लेखक ?

राजकुमार : मुझे पता है।

निर्देशक : फिर चलो उसी के पास।

गीता : चलो।

संजय : अभी चलो।

(सब जाते हैं। क्षण-भर के लिए प्रकाश बुझता है। जैसे ही फिर प्रकाश लौटता है, दायीं ओर मेज़-कुरसी। बायीं ओर से निर्देशक के साथ गीता, संजय, राजकुमार और भुतनी का प्रवेश। सब लेखक को नमस्ते करते हैं।)

लेखक : कहिये—इस तरह अचानक कैसे ?

निर्देशक : हम लोग एक अजीब मुसीबत में फँसे हैं।

लेखक : मुझे पता है। राक्षस राजकुमार हो गया।

निर्देशक : पहले यह गीता कहानी को रोकती थी, और अब यह भुतनी बिगड़ी हुई है।

संजय : कहती है—बिना राक्षस के क्या होगा ?

लेखक : ठीक कहती है।

गीता : पागल है यह।

भुतनी : चुप रह !

निर्देशक : शान्त !

(विराम)

राजकुमार : बिना राक्षस के कहानी क्यों नहीं होती ?

गीता : हाँ, क्यों नहीं ?

संजय : राक्षस तो खाऊँ-खाऊँ करता है—राजकुमार कितना सुन्दर है !

लेखक : कहानी में राक्षस का होना बहुत ज़रूरी है।

राजकुमार : क्यों ?

गीता : क्यों ?

संजय : क्यों ?

निर्देशक : राक्षस की जगह क्या राजकुमार नहीं हो सकता ?

लेखक : नहीं।

गीता : क्यों नहीं ?

लेखक : राक्षस किसे कहते हैं ?...तुम्हीं बताओ।

गीता : राक्षस—जो हवा में, आसमान में, जंगल में, अँधेरे में छिपा रहता है और एकाएक आकर बच्चों को खा जाता है।

लेखक : वह कैसा होता है ?...तुम बताओ ?

संजय : काला-कलूटा...भयानक चेहरा...बड़े-बड़े बाल...दाँत...नाखून।

लेखक : तुमने देखा है राक्षस ?

गीता : यही तो राक्षस था ?

संजय : हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है।

(लेखक हँसता है।)

लेखक : राक्षस, हवा, आसमान, जंगल और अँधेरे में नहीं रहता...वह चारों ओर हमारे बीच में रहता है।

बताओ—राक्षस क्या-क्या करता है ?

गीता : वह बच्चों की जान ले लेता है, आलसी होता है...बहुत खाता है...खूब पीता है...डरावना होता है।

संजय : इतने बड़े-बड़े बाल, नाखून, दाँत...भयानक चेहरा, क्रोधी, हिंसक।

लेखक : ये सारे दोष क्या मनुष्य में नहीं होते ?

गीता . नहीं तो।

लेखक : तुम्हारे पिता और माँ ने तुम्हें मार डालने के लिए जंगल में नही भेजा था ?

संजय : भेजा था।

लेखक : फिर बताओ। सोचो...मनुष्य और राक्षस !

(सब चुप हैं।)

लेखक : हाँ, सोचो। सोचने की ही तो बात है। मनुष्य के अवगुणों, दोषों को एक में जोड़कर राक्षस बनाया जाता है ताकि मनुष्य इससे अपनी तुलना करके, इससे लड़कर इन्सान बना रहे। इन्सान, हाँ, हैवान नहीं।

गीता : और यह जादू की छड़ी ?

लेखक : यह भी एक कल्पना है—इन्सान में इतनी सम्भावना छिपी है कि वह जादू की शक्ति की तरह कुछ भी असम्भव सम्भव कर सकता है।

(लेखक सामने आता है।)

लेखक : मैं इस राजकुमार को फिर राक्षस बना सकता हूँ

क्या ? नहीं, अब नहीं बना सकता। क्योंकि तुम्हारे छूने से इसमें मानवीय गुण पैदा हो गये। चलो, तुम सब मेरे चारों घूमना शुरू करो। चलो।

(लेखक बीच में खड़ा है। सब उसके चारों ओर घूमते हैं।)

लेखक : (जादू की छड़ी लिये हुए) बोलो, मैं इस जादू की छड़ी से क्या करूँ ?

गीता : इस भुतनी को राजकुमारी बना दो।

लेखक : वाह ! मैं अपनी कहानी का सत्यानाश कर दूं ?

संजय : कमाल है ! आप अपनी कहानी के लिए किसी को राक्षस, किसी को भुतनी बनाये रखेंगे ?

लेखक : जब तक समाज में लोगों के भीतर राक्षस-भूत-भुतनी हैं, तब तक मुझे राक्षस और भुतनी को इसी तरह बनाये रखना पड़ेगा।

कुमार : यह ज्यादती है आपकी।

लेखक : मजबूरी है।

(सन्नाटा। लेखक कुर्सी पर जा बैठता है।)

गीता : थोड़ी ही देर के लिए भुतनी को राजकुमारी बना दीजिये।

संजय : हाँ, थोड़ी ही देर के लिए।

निर्देशक : ताकि हम राजकुमार और राजकुमारी की शादी करा के अपना नाटक खत्म कर सकें।

लेखक : (हँसता है।) मुझे पता था—यही है तुम नाटक वालों की समस्या...बस, शादी करा के छुट्टी पा जाओ।

गीता : मान जाओ।

लेखक : यह मेरी शक्ति के बाहर है कि मैं भुतनी को राजकुमारी बना दूँ।

निर्देशक : तो फिर हम क्या करें ?

लेखक : यह बताना मेरा काम नहीं। जाओ...जैसा मिला है तुम्हें, उसी में काम करो...।

गीता : तो यह जादू की छड़ी झूठी है ?

लेखक : हाँ, जैसे राक्षस और मनुष्य।

राजकुमार : तो अब कहानी में मेरा काम क्या है ?

लेखक : अपना काम ढूँढ़ो उसी में।

राजकुमार : पर कहानी तुम्हारी है।

लेखक : मेरी कैसी ? कहानी तुम सबकी है...मैं तो चुपचाप देखने वाला हूँ—कैसे कोई इन्सान से राक्षस बन जाता है—फिर कैसे वह राजकुमार बन जाता है। जाओ, अपना काम करो, मुझे अपना काम करने दो, जाओ।

भुतनी : मेरी शक्ति वही राक्षस था। मैं अब और कुछ नहीं कर सकती।

लेखक : तो मैं क्या करूँ ?

भुतनी : मैं अब तुझे ही खाऊँगी।

(लेखक पर आक्रमण करती है। राजकुमार भुतनी को आगे बढ़ने से रोकता है।)

भुतनी : छोड़ दे मेरा रास्ता। मैं लेखक को खाऊँगी।

राजकुमार : उसका क्या कसूर ?

भुतनी : इसी ने तुझे इतने दिनों राक्षस बनाया, इसी ने मुझे भुतनी बनाया है। और अब मेरी शक्ति लेकर कहता है—मैं अपना काम करूँ।

लेखक : हाँ, सबका अपना-अपना काम है।

भुतनी : नहीं, मैं तुझे खाऊँगी। खाऊँगी...खाऊँगी।

(लेखक मुस्करा रहा है।)

राजकुमार : लो...लेखक की जगह मुझे खा लो।

गीता : नहीं...नहीं...यह नहीं हो सकता।

संजय : तू राजकुमार को नहीं खा सकती।

भुतनी : क्या करोगे तुम लोग ?

संजय : हम लड़ेंगे।...लड़ेंगे। तू ऐसा नहीं कर सकती।

लेखक : बस...बस, अब कहानी आगे बढ़ गयी। भुतनी राजकुमार को खाना चाहेगी—ये दोनों उससे लड़ेंगे।

निर्देशक : इसका अन्त क्या होगा ?

लेखक : मुझे क्या मालूम ?

निर्देशक : कहानी को अन्त अपने आप मिलेगा।

भुतनी : नहीं मिला तो ?

लेखक : अरे देवी जी, आकर मुझे खा लेना। बस...!

गीता : और मिल गया तो ?

लेखक : मैं तुम्हारी पार्टी में आऊँगा।

गीता : पक्का ?

लेखक : पक्का।

(सब जाते हैं। लेखक खड़ा है।)

(प्रकाश बुझता है।)

पाँचवाँ दृश्य

[भुतनी दौड़ी हुई आती है। काफी आवेश में है। जादू की छड़ी घुमाती है। संजय और गीता खिंचे हुए आते हैं।]

भुतनी : अब आ गये मेरी चंगुल में। अब मैं तुम्हें खाऊँगी।

(दोनों भागते हैं। भुतनी संजय को पकड़ लेती है।)

गीता : कहानी में भुतनी इस तरह नहीं खाती। वह पहले जादू के महल में फँसा कर रखती है।

संजय : वह तरह-तरह की मिठाइयाँ, फल-पकवान खिलाती है।

गीता : वह बहुत सारी चीजें दिखाती है।

भुतनी : बन्द करो बकवास। तुम गीता-संजय नहीं। तू है उस ग़रीब लकड़हारे की बेटी...और तू है बेटा... भाई-बहन। तूने मेरा राक्षस छीन लिया...पर मेरे पास और भी ताक़त है। मैं बिना खाये न रहूँगी। तुझे मिठाई चाहिए...फल-पकवान। मेरे पास तब राक्षस था। उसी की शक्ति से मैं वैसा करती थी। अब उस राक्षस को तूने राजकुमार बना दिया। अब उसकी सजा तुम्हें भोगनी होगी।

(गीता को पकड़ने दौड़ती है। संजय

हाथ छुड़ाकर भागता है। गीता को पकड़ लिया है। संजय धोखे से भुतनी के हाथ की जादू की छड़ी छीनता है। भुतनी दौड़ती है, पर वह हाथ नहीं आता।)

बहन : जादू की छड़ी हिलाओ, संजय...राजकुमार को बुलाओ...अपने सारे दोस्तों को बुलाओ।

भाई : (जादू की छड़ी हिलाता है।) आओ...आओ राजकुमार...आओ मेरे साथी...सारे दोस्तो आओ !

(भुतनी हँसती है। जादू की छड़ी में कोई ताक़त नहीं।)

बहन : उसे ज़मीन पर पटको।

(पटकता है।)

बहन : जादू की छड़ी तोड़ डालो।

(तोड़ने की कोशिश करता है—असफल।)

भुतनी : इसकी ताकत मैंने अपने पास वापस कर ली है। यह देखो मेरी ताकत। (ताली बजाती है। एक डरावनी चिड़िया आती है।) मेरे पास आ जाओ, वरना तुझे खा जायेगी।

(चिड़िया हमला करती है। दोनों बच्चे चिल्लाकर भागते हैं। दो धनुष-बाण लिये हुए राजकुमार आता है।)

राजकुमार : लो धनुषबाण, चलाओ इस पर।

(दोनों चलाते हैं। भयानक संघर्ष।)

भाई : बाणों का इस पर कोई असर नहीं होता।

भुतनी : (अट्टहास कर रही है।)

राजकुमार : बाण चलाते रहो।

(युद्ध चल रहा है। भुतनी अट्टहास कर रही है।)

राजकुमार : ओह! तो यह बात है। (राजकुमार तलवार खींचता है।) सुनो, अब मैं समझ गया।

(भाई बहन को दूर ले जाकर समझाता है।)

भाई : मैं इस चिड़िया को पहचानता हूँ।

बहन : यह जंगल में हमारे साथ-साथ चल रही थी।

भाई : यह चिड़िया नहीं, कोई शैतान है।

राजकुमार : मैं समझ गया, यह क्या है। अच्छा, तुम दोनों यहाँ चुपचाप खड़े देखते रहो।...सावधान!

(चिड़िया राजकुमार पर आक्रमण करती है।)

राजकुमार : सावधान! बाद में मुझे मत कहना। मैं समझ गया, यह चिड़िया कौन है।

भुतनी : तुझे कुछ पता नहीं। मैं तुम सबको खाऊँगी...और उस बदमाश लेखक को।

राजकुमार : मान जा...चलो जा यहाँ से।

भुतनी : खाऊँ...खाऊँ...खाऊँ!

(चिड़िया और भुतनी दोनों राजकुमार पर आक्रमण करती हैं। भयानक युद्ध।)

राजकुमार : ले, सम्हल! (चिड़िया का दायाँ पंख काट देता है।)

भुतनी : आह! (दायाँ हाथ झूल जाता है।)

राजकुमार : अब ले दूसरा पंख।

(दूसरा पंख काटता है—भुतनी का दूसरा हाथ झूल जाता है।)

राजकुमार : अब भी मान जा...और भाग जा।

भुतनी : खाऊँ...खाऊँ!

(चिड़िया के एक-एक पैर को तलवार से काटता है। चिड़िया गिरती है। साथ ही भुतनी भी गिरती है।)

भाई : राजकुमार! यह क्या तमाशा है? तुम जैसे-जैसे चिड़िया को मारते थे, वैसे-वैसे भुतनी के अंग कैसे टूटते गये?

राजकुमार : यही तो बात है—भुतनी की जान इस चिड़िया में थी। इसीलिए जैसे-जैसे यह घायल होती गयी, वैसे-वैसे भुतनी टूटती गयी।

भुतनी : आह! आह!

(दोनों उसे देखते हैं।)

बहन : भुतनी तड़प रही है।

भाई : चिड़िया अभी जिन्दा है।

राजकुमार : जैसे ही चिड़िया मरेगी, वैसे ही यह मर जायेगी।

भाई : तो भुतनी की जान इसी चिड़िया में है।

बहन : यह तूने कैसे जाना, राजकुमार ?

राजकुमार : मुझे सब पता था।

भाई : हमें पहले क्यों नहीं बताया ?

राजकुमार : मैं भूल गया था।

भाई : देखते क्या हो, मार दो इस चिड़िया को।

बहन : नहीं, नहीं, अब मत मारो बेचारी को।

भाई : फिर तुझे दया आई ?

बहन : हाय, बेचारी ! देखो...कैसे देख रही है।

(सब देखते हैं।)

राजकुमार : मुझे भी न जाने क्यों इस पर दया आ रही है।

भाई : नहीं, नहीं। इसे मार दो। छोड़ो मुझे।

बहन : नहीं। मत मारो।

(राजकुमार भुतनी को छूता है। उसकी आँखों से आँसू टपक कर भुतनी पर गिरता है। भुतनी राजकुमारी हो जाती है।)

भाई : यह क्या हो गया ?

बहन : राजकुमारी !

(राजकुमारी खड़ी है।)

राजकुमार : यह क्या हो गया ?

चिड़िया : (खड़ी होती है।) यह पहले राजकुमारी थी। इसे एक काली परी ने श्राप देकर भुतनी बना दिया था। और कहा था—जब राजकुमार की दया के आँसू इस पर गिरेंगे तो यह फिर राजकुमारी हो जायेगी।

(बच्चों के माँ-बाप दौड़े आते हैं।)

माँ : मेरे बच्चे !

बाप : हाय, मेरे बच्चे !

(अंक से लगा लेते हैं।)

माँ : इसी चिड़िया ने मुझ पर जादू डाला था—बच्चों को जंगल में डालने के लिए।

बाप : हाँ, यही वह भयानक चिड़िया थी। मेरे बच्चे !

(लेखक आता है।)

लेखक : अब बताओ, राक्षस कौन था ? हाँ बताओ... बोलो। अरे !

(सब चुप हैं।)

लेखक : मुझे भी नहीं पता था, तुम्हीं लोगों ने तो कर दिखाया—राक्षस हम सब में है, और राजकुमार भी। अब बोलो, भुतनी कहाँ गयी ?

बहन : भुतनी राजकुमारी हो गयी।

राजकुमारी : धन्यवाद, लेखक !

लेखक : क्यों हो गयी ? कैसे ?

राजकुमारी : पता नहीं।

लेखक : मुझे भी पता नहीं। बोलो, अब मुझे कौन खायेगा ?

राजकुमारी : कोई नहीं।

लेखक : कोई नहीं ? कोई नहीं ?

भाई : तो कहानी का अन्त हो गया ?

बहन : यही है अन्त ?

लेखक : नहीं। राजकुमार और राजकुमारी की शादी होगी, तुम लोग यही अन्त तो चाहते थे। बुलाओ अपने दोस्तों को।

भाई : मेरे दोस्त यहाँ कैसे आयेंगे ?

लेखक : लो, यह जादू की छड़ी। घुमाकर बुलाओ...सब आयेंगे।

बहन : इसमें ताकत नहीं है।

लेखक : ताकत के ग़लत इस्तेमाल से ताकत चली जाती है। अब इसमें ताकत फिर आ गयी। हाँ, बिलकुल !

बहन : कहाँ से ?

भाई : कैसे ?

लेखक : तुम दोनों के भीतर जो ताकत छिपी थी न, वही अब इस छड़ी में है। लो...देखो।

बहन : इसमें जादू नहीं ? कहाँ है ?

भाई : हाँ, कहाँ है ?

बहन : जादू और कुछ नहीं...जादू.. तुम हो। लो, घुमाओ इसे अपने हाथों। (बहन जादू की छड़ी घुमाती है। उसके तमाम साथी चारों ओर से बाजा बजाते, गाते हुए आते हैं। राजकुमारी और राजकुमार परस्पर एक-दूसरे के गले में जयमाला डालते हैं। सारा वातावरण संगीत, नृत्य से भर जाता है।)

(पर्दा)